

# डॉ. डेविड ए. डिसिल्वा , इब्रानियों, सत्र 8बी, इब्रानियों 9:1-10:18: मसीह हमारा प्रायश्चित (भाग 2)

© 2024 डेविड डिसिल्वा और टेड हिल्डेब्रांट

अध्याय 10 की आरंभिक आयतों में, लेखक उन लोगों को पूर्ण करने में प्रथम वाचा बलिदानों की अक्षमता के कारण पर विचार करने के लिए वापस आता है जो निकट आते हैं। इस तरह, वह मेल्कीसेदेक के क्रम के अनुसार नए सिरे से पुजारी के कार्य की आवश्यकता को स्थापित करता है। क्योंकि व्यवस्था, आने वाली अच्छी चीजों की छाया रखती है, न कि उन चीजों की वास्तविक समानता, उन लोगों को कभी भी पूर्ण नहीं कर सकती जो निकट आते हैं, अर्थात् उन्हीं वार्षिक बलिदानों के माध्यम से जो वे निरंतर चढ़ाते हैं।

यहाँ, लेखक ने कानून को, वास्तव में, आने वाली चीज़ की छाया कहा है। उसने पहले इस शब्द को केवल अध्याय 8, श्लोक 5 में स्वर्गीय निवास की सांसारिक प्रतिलिपि पर लागू किया था, लेकिन अब छाया शब्द को पूरे पंथ कानून की प्रकृति का वर्णन करने के लिए विस्तारित किया है। इसमें प्रभावकारिता की कमी है क्योंकि इसमें वास्तविक सार का अभाव है, अस्पष्ट रूप से खुद से दूर और आगे की ओर इशारा करते हुए उस अनुष्ठान की ओर इशारा करता है जिसमें पापों को दूर करने के लिए आवश्यक शक्ति है, अर्थात्, यीशु द्वारा खुद को बलिदान करना।

कई विद्वानों के लिए, छाया शब्द स्वतः ही ब्रह्मांड और वास्तविकता के बारे में प्लेटोनिक विचारों को सामने लाता है। आप प्लेटो के रिपब्लिक में गुफा के रूपक से परिचित हो सकते हैं, जहाँ सुकरात ने अधिकांश लोगों का वर्णन गुफा के प्रवेश द्वार, प्रकाश के स्रोत से दूर की ओर मुंह करके, उनके सामने की दीवार को देखते हुए, और उनके सामने से गुज़रती हुई छायाओं को देखते हुए किया है, लेकिन कभी भी गुफा के द्वार की ओर अपना सिर नहीं घुमाया है ताकि वे वास्तविक लोगों को देख सकें जो दीवार पर छाया डालते हुए आगे बढ़ रहे हैं। हालाँकि, हमारे लेखक प्लेटोनिक सोच से कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण तरीकों से अलग हैं क्योंकि लेखक एक लौकिक ढांचे के लिए प्रतिबद्ध है जिसमें ईश्वर मानव इतिहास में हस्तक्षेप करता है।

कानून उन वास्तविक चीजों की छाया है जो अभी भी भविष्य में हैं, न कि वे चीजें जो मानसिक अवधारणाओं के दायरे में पहले से मौजूद हैं, जैसा कि प्लेटो के दर्शन में है। कानून उन अच्छी चीजों की छाया है जो मूसा के दृष्टिकोण से आने वाली थीं और जो अब, उपदेशक के दृष्टिकोण से, वास्तव में यीशु के उच्च पुरोहितत्व में आ चुकी हैं। तोरा द्वारा निर्धारित बलिदानों की वार्षिक पुनरावृत्ति, और यहाँ लेखक मुख्य रूप से वार्षिक प्रायश्चित अनुष्ठान के बारे में सोच रहा है, लेखक के लिए उनकी अप्रभावीता का संकेत देता है।

इसके प्रमाण के रूप में वे विपरीत तर्क देते हैं। यदि ये अनुष्ठान विवेक को शुद्ध करने में सक्षम होते, तो क्या वे पूजा करने वालों के एक बार और हमेशा के लिए शुद्ध हो जाने के कारण बंद नहीं हो जाते, उनके विवेक पर अब कोई पाप नहीं रह जाता? लेकिन इनमें, पापों की वार्षिक याद दिलाई जाती है। यहाँ अघोषित धारणा यह है कि विवेक को शुद्ध करना एक बार का कार्य होना चाहिए और पाप फिर से विवेक को घेरने के लिए वापस नहीं आएंगे।

लेखक के मन में यिर्मयाह की भविष्यवाणी में नई वाचा के दो पहलू हो सकते हैं। एक ओर, परमेश्वर के लोगों के बीच खड़े पुराने पापों को हटाना, और दूसरी ओर, परमेश्वर को प्रसन्न करने वाली चीज़ों को जीना क्योंकि परमेश्वर ने मन और हृदय में आंतरिक रूप से परमेश्वर की माँगों को रोप दिया है, ताकि विवेक को फिर से अशुद्ध न किया जाए। हमारे लेखक के अनुसार, लेवी के पुजारी के अधीन संचालित अंतहीन बलिदान एक बहुत ही अलग लक्ष्य को प्राप्त करते हैं।

पापों को दूर करने के बजाय, वह दावा करता है कि इनमें पापों की वार्षिक याद दिलाने वाली बातें हैं। यह दावा ऐसा लगता है कि यह संख्या अध्याय 5, श्लोक 15 में एक विशेष बलिदान के सामान्यीकरण पर आधारित है, जो संदिग्ध व्यभिचारी के पापों को याद दिलाने के लिए किया गया बलिदान था, एक ईर्ष्यालु पति द्वारा अपनी पत्नी को विवेक-पीड़ित करने और उसके अपराध को खुले में लाने के लिए किया गया बलिदान। लेखक पापों की याद दिलाने के लिए इस एक बलिदान को देखता है और इसे योम किप्पुर या प्रायश्चित के दिन के बलिदानों सहित संपूर्ण बलिदान प्रणाली पर एक सामान्य सिद्धांत के रूप में लागू करता है।

किसी विशेष कानून का ऐसा सामान्यीकरण हमें बहुत अजीब लग सकता है, लेकिन यह हमारे लेखक के लिए अद्वितीय नहीं था। उदाहरण के लिए, अलेक्जेंड्रिया के फिलो ने उसी पाठ, संख्या 5:15 का उपयोग इस बात के प्रमाण के रूप में किया है कि जिस व्यक्ति का हृदय परमेश्वर के प्रति सही नहीं है, उसका बलिदान परमेश्वर को उनके पाप की याद दिलाने के अलावा और कुछ नहीं करता। इब्रानियों के लेखक ने वास्तव में प्रायश्चित के दिन की वैचारिक रूप से प्रेरित व्याख्या प्रस्तुत की है।

इसके वास्तविक प्रतिभागियों के लिए, इसमें कोई संदेह नहीं कि यह पापों की याद दिलाने से कहीं अधिक था। उदाहरण के लिए, लैव्यव्यवस्था 16 पद 30, हर संकेत देता है कि अनुष्ठान काम करना चाहिए। हम वहाँ पढ़ते हैं, इस दिन, आपके सभी पापों से आपको शुद्ध करने के लिए आपके लिए प्रायश्चित किया जाएगा; आप प्रभु के सामने शुद्ध होंगे।

हालाँकि, इब्रानियों के लेखक ने यह स्वीकार किया होगा कि संस्कार रिश्तों को सुधारते हैं, लेकिन वह सफलतापूर्वक तर्क देते हैं कि वे विशेष रूप से रिश्तों को बेहतर नहीं बनाते हैं। अभी भी उनके दिमाग में निर्णायक बात यह है कि पहली वाचा और उसके संस्कारों के तहत ईश्वर तक पहुँच पर सख्त सीमाएँ हैं। योम किप्पुर ने टोरा द्वारा निर्धारित ईश्वर तक सीमित, क्रमिक पहुँच को लागू किया और उसे कायम रखा।

इसने लोगों को उन बाधाओं को तोड़ने में कभी मदद नहीं की जो उन्हें ईश्वर से अलग करती थीं। अंतिम अर्थ में, इसने लोगों को कभी भी प्रभु के सामने वास्तव में शुद्ध नहीं बनाया। योम किप्पुर की प्रभावकारिता के इस कट्टरपंथी नकार को साबित करने के लिए, लेखक ने यह सिद्धांत जोड़ा है कि बैल और बकरियों के खून से पापों को दूर करना असंभव है।

लेखक द्वारा ऐसा दावा किया जाना हमें काफी आश्चर्यजनक लग सकता है, खास तौर पर लैव्यव्यवस्था 1630 के प्रकाश में, या लैव्यव्यवस्था 17, श्लोक 11 के प्रकाश में और भी अधिक बुनियादी रूप से, जहाँ प्रभु की आवाज़ सुनाई देती है कि शरीर का जीवन रक्त में है, और मैंने

इसे तुम्हारे जीवन के लिए वेदी पर प्रायश्चित्त करने के लिए दिया है, क्योंकि जीवन के रूप में, यह रक्त ही है जो प्रायश्चित्त करता है। हालाँकि, इब्रानियों के लेखक ऐसे अनुष्ठान नुस्खों से एक सहस्राब्दी से भी अधिक दूर हैं और उन्हें यहूदी भविष्यवक्ताओं द्वारा पशु बलि की आलोचना पर अपने पीछे देखने का लाभ है। उन लेखन में, भविष्यवक्ताओं ने अपनी चिंता व्यक्त की कि बलि के अनुष्ठानों का उपयोग केवल अप्रतिबंधित उत्पीड़न और अन्याय के न्यायोचित परिणामों के खिलाफ़ दवा के रूप में नहीं किया जाना चाहिए।

यशायाह जैसे भविष्यवक्ताओं ने पहले ही आज्ञाकारिता के मूल्य को पापबलि के ऊपर बढ़ा दिया था जो विफलता के बाद चढ़ाए जाते थे। वे अपने साथी इस्राएलियों के साथ व्यवहार में प्रेम और दया के सकारात्मक मूल्यों को आत्मसात करने और अन्याय और शोषण से बचने के महत्व पर भी जोर देते हैं। लेखक ईश्वर की भविष्यवाणियों पर भी नज़र डाल सकता है, जिसमें हृदय और जीवन के समर्पण के बिना पशु बलि के प्रदर्शन के प्रति उसकी घृणा और अस्वीकृति के बारे में बात करते हुए ईश्वर की असंतुष्टि के बारे में बताया गया है।

यशायाह 1, पद 11 से 13, इस भविष्यवाणी का एक उदाहरण है। यहोवा कहता है, तेरे चढ़ावे की बहुतायत मेरे लिए क्या मायने रखती है। मैं मेढ़ों के होमबलि और मेमनों की चर्बी से तृप्त हूँ।

मुझे बैलों और बकरों का खून नहीं चाहिए। भेंट चढ़ाना बेकार है। दरअसल, इब्रानियों के लेखक ने यीशु के श्रेष्ठ बलिदान के बारे में अपनी व्याख्या के दौरान इस यशायाह पाठ से बैलों और बकरों के खून वाक्यांश का दो बार इस्तेमाल किया है।

पहले अध्याय 9, श्लोक 13 में, और फिर यहाँ अध्याय 10, श्लोक 4 में। भविष्यवाणी के ग्रंथों में जो बलिदान प्रणाली की अखंडता की रक्षा करने का प्रयास था, वह इब्रानियों में प्रणाली की पूर्ण अप्रभावीता की घोषणा बन जाता है। एक बलिदान की आवश्यकता को स्थापित करने के बाद जो लेवी के पुजारी प्रणाली के भीतर संभव से परे होगा, लेखक अब शास्त्र में अपने विश्वास के लिए एक वारंट की तलाश करता है कि यीशु ने उस आवश्यकता को पूरा किया। लेखक भजन 40, श्लोक 6 से 8 की ओर मुड़ता है, जो कि भगवान द्वारा कानून बनाए गए बहुत ही पशु बलिदानों की अप्रभावीता के बारे में उनके कट्टरपंथी दावों के लिए मुख्य प्रमाण के रूप में है और स्वैच्छिक भेंट के लिए वारंट के रूप में भी है, जब वे बलिदान नहीं कर सकते थे।

और इसलिए, हम पढ़ते हैं, इसलिए जब वह दुनिया में आता है, तो वह कहता है, तूने बलिदान और भेंट नहीं चाही, लेकिन तूने मेरे लिए एक शरीर तैयार किया। तू होमबलि और पापबलि से प्रसन्न नहीं है। तब मैंने कहा, देख मैं आता हूँ, पुस्तक के अध्याय में मेरे विषय में लिखा है, कि हे परमेश्वर तेरी इच्छा पूरी करूँ।

ऊपर से यह कहते हुए कि बलिदान और भेंट और होमबलि और पापबलि जो व्यवस्था के अनुसार चढ़ाए जाते हैं, उन्हें तुमने न चाहा और न उनसे प्रसन्न हुए। फिर वह कहता है, देख, मैं तेरी इच्छा पूरी करने आया हूँ। वह पहले को हटा देता है ताकि दूसरे को स्थापित करे जिसके द्वारा हम एक बार और हमेशा के लिए यीशु मसीह की देह की भेंट के द्वारा पवित्र हो जाएँ।

जब हम भजन 40 के उद्धरण की तुलना इब्रानियों के पाठ में दिए गए भजन 40 के अनुवाद से करते हैं, उदाहरण के लिए, पुराने नियम के अधिकांश अंग्रेजी अनुवादों में, तो हमें कुछ महत्वपूर्ण अंतर दिखाई देंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि, फिर से, व्यावहारिक रूप से हर बाइबिल में अंग्रेजी पुराना नियम हिब्रू पाठ, मसोरेटिक पाठ पर आधारित है, जबकि इब्रानियों के लेखक भजन 40 को इसके ग्रीक अनुवाद में पढ़ रहे हैं, जिसे आमतौर पर सेप्टुआजेंट के रूप में संदर्भित किया जाता है। भजन के हिब्रू पाठ में, हम पढ़ेंगे, बलिदान और भेंट तुम नहीं चाहते, लेकिन कान जो तुमने मेरे लिए खोदे हैं।

तूने होमबलि और पापबलि की मांग नहीं की। तब मैंने कहा देख मैं आता हूँ नियम पुस्तक में मेरे विषय में लिखा है। मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ। हे मेरे परमेश्वर, तेरी व्यवस्था मेरे हृदय में लिखी हुई है।

भजनकार के कबूलनामे "तुमने मेरे लिए कान खोदे हैं" से पता चलता है कि टोरा का पालन करना, भगवान की आज्ञाओं को सुनने और उन पर ध्यान देने के लिए कानों का प्रावधान, टोरा के उल्लंघन को प्रतिस्थापित करना है, जो पशु बलि को अभी भी भजनकार द्वारा पहली जगह में प्रभावी आवश्यक माना जाता है। लेकिन यहूदियों ने हिब्रू भजन का ग्रीक में अनुवाद किया, जिसका अनुवाद "तुमने मेरे लिए कान खोदे हैं" के रूप में किया गया, जो एक शरीर है जिसे तुमने मेरे लिए तैयार किया है। यह परिवर्तन एक अधिक सौंदर्यपूर्ण रूप से मनभावन छवि के रूप में पेश किया जा सकता था क्योंकि कान खोदना भगवान की रचनात्मक क्रिया की प्रस्तुति में बहुत बदसूरत या बस बहुत ही मानवरूपी छवि माना जा सकता था।

हालाँकि, अनुवादक फिर भी हिब्रू पाठ के समान ही अर्थ व्यक्त कर रहा होगा। टोरा का पालन करना, एक शरीर दिया जाना जिसके साथ परमेश्वर की वाचा की शर्तों को पूरा किया जा सके, परमेश्वर को प्रसन्न करता है, जबकि प्रायश्चित्त बलिदान के बाद अपराध परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करेगा, हालाँकि यह अभी भी क्षमा प्राप्त कर सकता है। हालाँकि, इब्रानियों के लेखक को एक बहुत ही अलग व्याख्या मिलती है जब वह इस भजन को यीशु के होठों पर लागू करता है।

उनका एक व्याख्यात्मक अभ्यास जिसका हम इस धर्मोपदेश में पहले ही सामना कर चुके हैं। साथ ही, वे इसे अपने सिद्धांत के अनुरूप पढ़ रहे हैं कि परमेश्वर का एक और हालिया वचन किसी पुराने कथन को सही, स्पष्ट या यहाँ तक कि निरस्त भी कर सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि, परमेश्वर ने वास्तव में लैव्यव्यवस्था में पशु बलि की स्थापना की होगी, लेकिन सदियों बाद भजनकार की आवाज़ में, परमेश्वर की यह भविष्यवाणी उन बलिदानों में परमेश्वर की पूरी तरह से खुशी की कमी और किसी और चीज़ की परमेश्वर की इच्छा की घोषणा करती है।

जब इब्रानियों के लेखक ने इस भजन के उद्धरण को इस वाक्यांश से शुरू किया कि इसलिए जब वह, जिसका अर्थ है यीशु का पुत्र, इसलिए दुनिया में आता है, तो वह भजन के अंश की व्याख्या के लिए सूक्ष्म रूप से व्याख्यात्मक संदर्भ निर्धारित करता है। शरीर की तैयारी अब बेटे द्वारा मांस और रक्त को धारण करने के रूप में सुनी जाती है जो कई बहनों और भाइयों द्वारा साझा किया जाता है। शब्द अवतार में मानो देह बन गया।

भजन के पाठ को पढ़ने के बाद, लेखक दूसरी बार इस पर काम करता है, जिसमें परमेश्वर द्वारा उन बलिदानों को अस्वीकार करने के बीच के अंतर को उजागर किया गया है जो व्यवस्था के अनुसार चढ़ाए जाते हैं और परमेश्वर द्वारा दूसरे प्रकार के बलिदान को स्वीकार करने के बीच अंतर को उजागर किया गया है जिसमें पुत्र की स्वेच्छा से आज्ञाकारिता शामिल है जिसके लिए परमेश्वर ने पूर्व के बलिदानों होमबलि और पशु बलि के विकल्प के रूप में एक शरीर तैयार किया है। इस प्रकार, भजन 40 में, हमारे लेखक को अपने दावे को पुष्ट करने के लिए एक आधिकारिक शास्त्रीय वारंट मिलता है कि पशु बलि ईश्वरीय-मानव संबंध के लिए कुछ भी महत्वपूर्ण हासिल नहीं करती है। वास्तव में, परमेश्वर ने यीशु की भेंट के पक्ष में इन्हें अलग रखा है।

जैसा कि लेखक ने स्वयं लिखा है, वह दूसरे को स्थापित करने के लिए पहले को अलग रखता है या हटा देता है। भजन में परमेश्वर की इच्छा पूरी करने का अर्थ श्लोक 10 में स्पष्ट किया गया है। इस इच्छा के माध्यम से, हम एक बार और हमेशा के लिए यीशु मसीह के शरीर की भेंट के माध्यम से पवित्र हो गए हैं।

लेखक ने यहाँ उद्धृत भजन के तीन मुख्य शब्दों को पुनः संदर्भित किया है, शरीर की पेशकश की है और उन्हें इस भजन पाठ की अपनी निर्णायक व्याख्या में शामिल किया है। यह भजन ईश्वर को प्रसन्न करने के बेहतर साधन के रूप में टोरा पालन के प्रति प्रतिबद्धता की घोषणा से एक ऐसे दैवीय कथन में बदल गया है, जिसके द्वारा ईश्वर की इच्छा को इस उद्देश्य के लिए ईश्वर द्वारा उसके लिए तैयार किए गए यीशु के शरीर के आत्म-बलिदान द्वारा पूरा किया जाएगा। इस प्रकार पवित्रशास्त्र उस अजीब बलिदान के लिए वारंट प्रदान करता है जिसे प्रारंभिक चर्च ने मसीह की मृत्यु माना था।

अध्याय 10, श्लोक 11 से 18 में, लेखक अपने मुख्य तर्क को उसके निष्कर्ष पर लाता है। वह भजन 110, श्लोक 1 का हवाला देकर ऐसा करता है, मेरे दाहिने हाथ बैठो जब तक कि मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे पैरों के नीचे की चौकी न बना दूँ, एक श्लोक जिसने यीशु के पुरोहिती कार्य की चर्चा में इस पूरे उपदेश में प्रमुखता प्राप्त की है। ऐसा करने में, लेखक आश्चर्यजनक तरीके से यीशु के एक बार के बलिदान की प्रभावशीलता के बारे में अपने दावों की पुष्टि करने में सक्षम है।

और इसलिए, हम पढ़ते हैं, और हर याजक प्रतिदिन खड़ा होकर सेवा करता है और बार-बार वही बलिदान चढ़ाता है जो पाप को दूर नहीं कर सकता। लेकिन यह एक ही बलिदान पापों के बदले चढ़ाकर, शेष समय के लिए परमेश्वर के दाहिने हाथ स्थायी रूप से बैठ गया है, और अपने शत्रुओं के उसके पाँवों के नीचे की चौकी बनने की प्रतीक्षा कर रहा है। क्योंकि एक ही बलिदान के द्वारा उसने पवित्र किए जाने वालों को सदा के लिए सिद्ध कर दिया है।

लेखक यहाँ भजन 110 पद 1 के निहितार्थों को आगे बढ़ा रहा है, यीशु का याजकत्व के लिए बैठना, जो भजन 110 पद 4 का विषय है। खड़े होने को तम्बू और मंदिर में सेवा करने की मुद्रा के रूप में जाना जाता था। व्यवस्थाविवरण 10 पद 8 लेवी के गोत्र के बारे में बताता है कि वे लोग अलग रखे गए हैं, उद्धरण, सेवा करने के लिए परमेश्वर के सामने खड़े होने के लिए। व्यवस्थाविवरण 18 पद 7 में लेवियों का वर्णन उन लोगों के रूप में किया गया है, जो फिर से

उद्धृत करते हुए, वहाँ प्रभु के सामने सेवा करने के लिए खड़े होते हैं। जब याजक को, मलिकिसिदक के आदेश के बाद, भजन 110 पद 1 में परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठने के लिए आमंत्रित किया जाता है, तो लेखक यह निष्कर्ष निकालता है कि पाठ यीशु के याजकत्व के बारे में कुछ महत्वपूर्ण कह रहा है।

भजन एक ऐसे पुरोहित वर्ग को प्रस्तुत करता है जो बार-बार पंथ संबंधी गतिविधियों में शामिल नहीं होगा, एक ऐसी गतिविधि जिसके लिए एक पुजारी को खड़े होने की आवश्यकता होगी। इसके बजाय, भजन 110 पद 1 एक पूर्ण पुरोहित कार्य की आशा करता है जिसके बाद मेल्कीसेदेक की वंशावली में पुरोहित पदधारी अपने स्वर्गारोहण और अपने शत्रुओं के अंतिम अधीनता के बीच लंबे अंतराल के लिए बैठ सकता है। भजन 110, पद 1 के उस दूसरे घटक पर लौटकर, जब तक कि मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे पैरों के लिए एक पायदान न बना दूँ, लेखक उस युगांत संबंधी राग पर भी लौटता है जिसे उसने अध्याय 9, पद 26 से 28 में बजाया था।

यहाँ, हालाँकि, वह यीशु के दूसरी बार प्रकट होने के दूसरे पहलू पर प्रकाश डालता है। यह सिर्फ़ उन लोगों को पुरस्कृत करने के लिए नहीं होगा जो उत्सुकता से उसका इंतज़ार कर रहे हैं, जैसा कि उसने 9 26 से 28 में कहा था, बल्कि उन लोगों को वश में करने के लिए भी होगा जो बेटे का विरोध करते हैं, बजाय इसके कि वे उसके साथी और दोस्त बन जाएँ। संबोधित करने वालों में से जो ईसाई प्रतिबद्ध हैं, उनके लिए यह स्वागत योग्य आश्वासन प्रदान करता है कि जिस परमेश्वर ने यीशु के सम्मान को सही ठहराया, वह उन लोगों के खिलाफ़ यीशु के मुवक्किलों के सम्मान को भी सही ठहराएगा जिन्होंने दोनों का क्रूरतापूर्वक विरोध किया है।

हालाँकि, जो लोग अपनी प्रतिबद्धता में डगमगा रहे हैं, और मसीह के नाम के साथ खुले तौर पर जुड़ने से पीछे हटने के लाभों पर विचार कर रहे हैं, उनके लिए ये विकल्प उन्हें ईसाई समूह में बने रहने में मदद करेंगे। उपदेशक इब्रानियों 10 पद 19 से शुरू होने वाले अनुभाग में दिए गए उपदेशों में इसे पुष्ट करेंगे। कोई व्यक्ति या तो विवेक की शुद्धि का आनंद ले सकता है, जो ईश्वर की उपस्थिति तक अभूतपूर्व पहुँच की अनुमति देता है, या कोई विपरीत चरम पर जा सकता है और पुत्र को दुश्मन और ईश्वर को न्यायाधीश और दंड के एजेंट के रूप में देख सकता है।

लेखक ने अध्याय 10 की आयत 14 को वचन के समाधान के रूप में प्रस्तुत किया है, क्षमा करें, अध्याय 10 की आयत 1 में घोषित समस्या के समाधान के रूप में। तीन साझा शब्द या वाक्यांश आयत 1 और 14 को इस खंड के चारों ओर समावेशन, मौखिक बुकएंड के रूप में चिह्नित करते हैं। जबकि टोरा द्वारा निर्धारित निरंतर चढ़ाए जाने वाले बलिदान ईश्वर के निकट आने वाले लोगों को पूर्ण करने में असमर्थ हैं, यीशु ने एक ही बलिदान के द्वारा, उसके माध्यम से ईश्वर के निकट आने वाले उपासकों को हमेशा के लिए पूर्ण कर दिया है।

यहाँ तीन साझा शब्द हैं भेंट, सदा, और परिपूर्ण, और यह श्रोताओं को संकेत देता है कि पद 1 में प्रस्तुत समस्या का उत्तर अब पद 14 में और उसके समय तक मिल चुका है। अध्याय 10, पद 19 से 22 में इस लंबी व्याख्या के बाद दिए गए उपदेश का पहला पैराग्राफ़ श्रोताओं से आग्रह करेगा कि वे मसीह द्वारा उनके नए और पूर्ण शुद्धिकरण द्वारा लाए गए लाभों को बनाए रखें। यह उपदेश अध्याय 4, पद 14 से 16 में दिए गए पहले उपदेश को भी प्रतिध्वनित करता है, इस तरह,

संक्षेप में, यीशु के पुरोहितत्व के बारे में उपदेश का संपूर्ण केंद्रीय तर्क यह दिखाने के लिए काम आया है कि अध्याय 4, पद 14 से 16 में पहले दिए गए उपदेश पर श्रोताओं द्वारा आत्मविश्वास से काम क्यों किया जा सकता है, और क्यों श्रोता वास्तव में ईश्वर की उपस्थिति तक उनकी पहुँच और उनके बेहतर शहर और मातृभूमि की ईसाई तीर्थयात्रा में उनकी दृढ़ता के लिए ईश्वर की समय पर मदद के बारे में आश्वस्त हो सकते हैं।

लेखक इस केंद्रीय भाग का समापन यिर्मयाह 31 के दूसरे पाठ के साथ करता है, इस बार सिर्फ श्लोक 33 और 34, जो उसके प्रवचन को पूरा करता है। उसने यिर्मयाह 31:31 से 34 तक के सभी अंशों को इब्रानियों 8, श्लोक 7 से 13 में उद्धृत किया था। यहाँ, उनमें से कुछ श्लोकों का दोहराव लेखक की व्याख्या के लिए एक तरह से शास्त्रीय क्यूईडी के रूप में कार्य करता है।

एक घोषणा, देखो, मैंने जो साबित करने का लक्ष्य रखा था, उसे साबित कर दिया है, यह दिखाते हुए कि कैसे यिर्मयाह की भविष्यवाणी वास्तव में यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद की गतिविधि में पूरी हुई। लेखक जो व्याख्या कर रहा है, उसकी सच्चाई की गवाही देने के लिए पवित्र आत्मा से कम अधिकार नहीं लाया गया है। और पवित्र आत्मा भी हमारे लिए गवाही देता है, क्योंकि यह कहने के बाद, यह वह वाचा है जो मैं उन दिनों के बाद उनके साथ बनाऊंगा, प्रभु कहते हैं, मैं अपने नियमों को उनके दिलों पर लिखूंगा, और उनके दिमागों पर भी लिखूंगा, और उनके पापों और उनके अपराधों को मैं निश्चित रूप से फिर कभी याद नहीं रखूंगा।

जहाँ इन पापों की क्षमा है, वहाँ पापों के लिए कोई बलिदान नहीं है। नए करार के उद्घाटन का तथ्य, ईसाई संस्कृति के लिए एक बुनियादी आधार है और उपदेशक के श्रोताओं द्वारा विवादित होने की संभावना नहीं है, इसका अर्थ है, यिर्मयाह में भविष्यवाणी के अनुसार, पापों की निर्णायक क्षमा। यह एक बार फिर, इब्रानियों 10 आयत 14 में लेखक द्वारा किए गए दावे की सच्चाई का सबूत है।

लेखक नए करार के वादे के दो घटकों की ओर ध्यान आकर्षित करता है। न केवल परमेश्वर का वादा उन पापों को दूर करने का है जो परमेश्वर और परमेश्वर के लोगों के बीच बाधा के रूप में खड़े थे, बल्कि परमेश्वर का वादा भी है कि लोगों को इस बात की आंतरिक जागरूकता से लैस किया जाएगा कि परमेश्वर को क्या पसंद है ताकि लोग आज्ञाकारी रूप से और इस तरह से जीवन जी सकें जिससे परमेश्वर प्रसन्न हो। लेखक आगे मण्डली को नए करार के तहत प्रदान किए गए दोनों लाभों को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

वह इस मुख्य प्रवचन से पहले और बाद में, दोनों ही बार उन्हें प्रोत्साहित करते हुए कहता है कि वे साहसपूर्वक परमेश्वर के सिंहासन के पास जाने का लाभ उठाएँ, और वह पूरे उपदेश में उन्हें ऐसा जीवन जीने के लिए कहता है जिसे परमेश्वर स्वीकार करता है। यहाँ वह जो लिखता है, जहाँ इन लोगों की क्षमा है, वहाँ पापबलि के लिए कोई जगह नहीं है, और वह दो दिशाओं में जाएगा। यहाँ, कथन को हमारे लिए यीशु की मृत्यु की निर्णायक प्रभावकारिता की पुष्टि के रूप में सकारात्मक रूप से पढ़ा जाता है।

हालाँकि, कुछ ही साँसों के बाद, अध्याय 10, श्लोक 26 से 31 में, लेखक इस तथ्य पर वापस लौटेगा कि पापों के लिए कोई बलिदान नहीं रहता है, जो कि उसकी सबसे खतरनाक चेतावनी का हिस्सा है कि उस व्यक्ति से दूर न जाएँ जिसने उनके लिए यह निर्णायक और अंतिम पाप बलिदान दिया है। इब्रानियों 9:1 से 10:18, यीशु के पुरोहितत्व के बारे में लेखक के केंद्रीय प्रवचन का दूसरा भाग, कई महत्वपूर्ण तरीकों से इस उपदेश के लिए लेखक के बयानबाजी लक्ष्यों को आगे बढ़ाता है। सबसे पहले, यह ईसाई समुदाय के भीतर यीशु, उनकी मृत्यु और उसके बाद के बारे में प्रमुख विश्वासों को पुष्ट करता है।

उपदेशक इन घटनाओं को पापों के लिए निर्णायक प्रायश्चित और मसीह के अनुयायियों के लिए ईश्वर की शाश्वत उपस्थिति में प्रवेश करने के लिए निर्णायक योग्यता के रूप में प्रस्तुत करता है, और वह यीशु की मृत्यु और स्वर्गारोहण के महत्व को नए करार के उद्घाटन, उसके वादों के अधिनियमन के रूप में भी स्थापित करता है। दूसरा, लेखक द्वारा प्रस्तुत की गई प्रस्तुति में जो अनिवार्य रूप से एक अदृश्य स्वर्गीय अनुष्ठान कार्य है, लेखक श्रोताओं को यीशु के स्वर्गारोहण, दृश्यमान क्षेत्र से उनके प्रस्थान के बाद अदृश्य क्षेत्र में जो कुछ हो रहा है या ऐतिहासिक रूप से जो कुछ हुआ है, उसमें कल्पनाशील रूप से संलग्न होने के लिए आमंत्रित करता है। अन्य बातों के अलावा, यह श्रोताओं के लिए उस दूसरे क्षेत्र की वास्तविकता, साथ ही मृत्यु से परे गतिविधि की वास्तविकता को पुष्ट करेगा।

ये विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं क्योंकि लेखक श्रोताओं को सिर्फ इस जीवन के लिए नहीं बल्कि आने वाले युग के जीवन के लिए जीने के लिए प्रेरित करना चाहता है, और लेखक श्रोताओं को इस जीवन की वस्तुओं, इस भौतिक दृश्यमान दुनिया की वस्तुओं को त्यागने के लिए प्रेरित करना चाहता है, ताकि वे उस अदृश्य स्वर्गीय क्षेत्र में जो कुछ भी उनके पास है, उसके पक्ष में रहें। जितना अधिक वह उन्हें उस क्षेत्र के बारे में एक वास्तविकता के रूप में सोचने में संलग्न कर सकता है, एक ऐसी जगह के रूप में जहाँ वास्तविक कार्य होता है, जैसे कि यीशु का उनके लिए वहाँ प्रवेश और परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठना, उतना ही अधिक वह उन्हें इस दुनिया, इस दृश्यमान वास्तविकता के बारे में सोचने से मुक्त करेगा, जिसके लिए उन्हें चिंतित होना चाहिए। तीसरा, वह उन अद्वितीय और अभूतपूर्व लाभों को प्रस्तुत करता है जो यीशु ने उनके लिए प्राप्त किए हैं और यीशु के प्रति उनके लगाव के आधार पर उन्हें प्राप्त हुए हैं।

लाभ की यह प्रस्तुति लेखक के उपदेशों का आधार बन जाती है, वे दोनों जो उसने पहले ही अध्याय चार में शुरू कर दिए थे और उसके बाद के उपदेश जो उसके उपदेश के शेष भाग में होंगे। ये अध्याय हमें चुनौती देते रहते हैं और साथ ही हम अपने संदर्भ में शिष्यत्व और सेवकाई के बारे में सोचते हैं। सबसे पहले, हम लेविटिकल प्रणाली के तहत ईश्वर तक क्रमिक पहुँच की लेखक की आलोचना को इस बारे में गंभीरता से सोचे बिना नहीं पढ़ सकते कि हम ईश्वर तक पहुँच को कैसे सीमित कर रहे हैं और अपनी ईसाई मण्डलियों के भीतर नए पदानुक्रम बना रहे हैं।

जबकि पादरी चर्च के भीतर बहुत महत्वपूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं, हमेशा यह खतरा बना रहता है कि आम लोगों और पादरी के बीच का अंतर ईश्वर तक उस तरह की क्रमिक पहुँच को फिर से स्थापित कर देगा जिसे इब्रानियों के लेखक ने लेविटिकल सिस्टम का एक गहरा दोष

माना था। पादरी को विश्वासियों के पूरे समूह के लिए केवल सुविधाकर्ता और सुसज्जित करने वाले के बजाय नए मध्यस्थों के रूप में देखा जा सकता है जो एक साथ मिलकर उस पुरोहिताई को निभाते हैं जिसे ईश्वर ने उन सभी को समान रूप से प्रदान किया है। पादरी को मंत्रालय के पेशेवरों के रूप में भी देखा जा सकता है, जो चर्च के सभी मंत्रियों को सुसज्जित करने के बजाय चर्च का काम करने के लिए अलग रखे गए हैं जिन्हें दूसरों तक ईश्वर के अनुग्रह को बढ़ाने के अपने स्वयं के पुरोहिती मंत्रालय के लिए यीशु की भेंट द्वारा पवित्र किया गया है।

यह भी खतरा है कि आम लोग अपने जीवन को पादरी के जीवन के बराबर पवित्र नहीं मानेंगे और वे मसीह द्वारा अपने आध्यात्मिक समर्पण के कारण उन पर आने वाली ज़िम्मेदारियों को नहीं उठा सकते। इब्रानियों के लिए उपदेश अध्याय 13 में विश्वासियों को आराधना, गवाही और प्रेम और सेवा के कार्यों के बलिदान चढ़ाने के लिए बुलाएगा। इस प्रकार उपदेशक आम लोगों की दैनिक गतिविधि को पुरोहिती गतिविधि की भाषा में प्रस्तुत करता है।

इसलिए चर्च में हम पर यह दायित्व है कि हम पूर्णकालिक सेवकाई पेशेवरों के काम का सम्मान करें और पादरी मण्डली में जो लाते हैं उसका सम्मान करें, न कि विभाजन, जाति व्यवस्था को फिर से स्थापित करें, जिसे इब्रानियों के लेखक ने देखा है कि यीशु ने परमेश्वर के सभी लोगों की ओर से अपने पुरोहिती कार्य में जीत हासिल की है। परमेश्वर तक हमारी पहुँच में अब सभी बाधाओं को दूर करना हम सभी को प्रार्थना और आउटरीच में मेहनती सेवकाई करने, पुरोहितों के उचित काम में शामिल होने, परमेश्वर और मनुष्यों के बीच सामंजस्य की घोषणा करने और दूसरों को परमेश्वर से संबंध बनाने के नए और अंतरंग तरीके से बुलाने के लिए कहता है जिसे यीशु ने हम सभी के लिए खोला है। दूसरा, इब्रानियों के लेखक हमें उस पुरोहिती कार्य के बीच रहने की जागरूकता के साथ छोड़ते हैं जिसे यीशु ने अपनी मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण में हमारे लिए पूरा किया है और वह कार्य जो यीशु को दूसरी बार लौटने पर करना है, पापों से निपटने के लिए नहीं, बल्कि उन लोगों को पुरस्कृत करने के लिए जो उत्सुकता से उसका इंतजार करते हैं और उसके दुश्मनों को वश में करते हैं।

इस अंतरिम अवधि में हमारा कार्य हमारे मेल-मिलाप वाले दिव्य संरक्षक के प्रति वफ़ादार बने रहना और ईश्वर के नाम से बुलाए गए लोगों के प्रति प्रतिबद्ध रहना, अविश्वासी, कभी-कभी मज़ाक उड़ाने वाले, कभी-कभी शत्रुतापूर्ण समाज के सामने वफ़ादारी दिखाना और जैसा कि लेखक इब्रानियों 9:28 में कहते हैं, मसीह के लिए उत्सुकता से प्रतीक्षा करना है। इस प्रतीक्षा का अर्थ है अपनी गतिविधियों को चुनना, अपनी प्राथमिकताएँ निर्धारित करना और उस दिन के प्रकाश में अपनी महत्वाकांक्षाओं को आकार देना जब मसीह दूसरी बार प्रकट होंगे। अपनी महत्वाकांक्षाओं को इस तरह केंद्रित करके, जब हम खुद को गवाही, आराधना, प्रेम के कार्यों और साझा करने में लगाते हैं, तो हम पाते हैं कि हम वास्तव में अपने दिलों और दिमागों में लिखे गए कानून को पूरा कर रहे हैं, ऐसा जीवन जी रहे हैं जो ईश्वर को प्रसन्न करता है, और विवेक की नई अशुद्धियों से बचते हैं।